विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -०७ -०६ - २०२१**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज यात्रा और यात्री कविता के बारे में अध्ययन करेंगे।

यात्रा और यात्री

साँस चलती है तुझे
चलना पड़ेगा ही मुसाफिर!

चल रहा है तारकों का
दल गगन में गीत गाता,
चल रहा आकाश भी है
शून्य में भ्रमता-भ्रमाता,
पाँव के नीचे पड़ी
अचला नहीं, यह चंचला है,
एक कण भी, एक क्षण भी
एक थल पर टिक न पाता,
शक्तियाँ गति की तुझे
सब ओर से घेरे हुए है;
स्थान से अपने तुझे

टलना पड़ेगा ही, मुसाफिर!

साँस चलती है तुझे

चलना पड़ेगा ही मुसाफिर!

शब्दार्थ

1. साँस - श्वास
2. मुसाफ़िर - यात्री
3. तारकों - तारों का
4. दल - समूह
5. गगन - आसमान
6. आकाश - नभ
7. शून्य - अंतरिक्ष
8. भ्रमता-भ्रमाता -घूमता-घुमाता
9. अचला - पृथ्वी
10. चंचला - गतिमान
11. क्षण - पल
12. थल - जगह
13. टिक - टहराव
14. ओर - तरफ
15. और - एवं /

16. स्थान - जगह

हरिवंश राय बच्चन